आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017

मन के जीते जीत सदा

■ वर्ष-1 ■ अंक- 163 ■ तारीख- 20 मई, 2015 ज्येष्ठ शुक्ल - तृतीया ■ बुधवार ■ उदयपुर ■ कुल पृष्ठ-2 ■ मूल्य-1 रूपया

गणपति- आराधना

इस मंत्र के द्वारा भगवान गणेश को दीप दर्शन कराना चाहिए

साज्यं च वर्तिसंयुक्तंवह्निना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम् ।।
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने ।
त्राहि मां निरयाद् घोरद्दीपज्योत ।।

दोहावली

पुन्य प्रीति पति प्रापतिउ परमारथ पथ पाँच।
ललहिं सुजन परिहरहिं खल सुनहु सिखावन साँच।।

तुलसीदास कहते हैं कि पुण्य, प्रेम, प्रतिष्ठा, प्राप्ति और परमार्थ का मार्ग – सज्जन पुरुष इन्हें ग्रहण करते हैं। इसके विपरीत दुर्जन मनष्य इनका परित्याग कर देते हैं। इस सच्ची सीख का भली–भाँति समझ लो।

तैलाभ्यंग

अभ्यंगमाचरेन्नित्यं स जराश्रमवातहा ।
दृष्टि-प्रसाद-पुष्टयायुः स्वप्नसुत्वक्तदार्त्यकृत ।।

जो व्यक्ति नित्य शरीर पर तेल की मालिश करता है उसकी सुन्दर दृष्टि, रक्त की क्रिया ठीक, देह सुदृढ़, शांत निद्रा, मुलायम त्वचा तथा देह में तेजस्विता तथा मन में प्रसन्नता बनी रहती है। मस्तिष्क, कर्णमूल और पादतल पर मर्दन करने पर मस्तिष्क और स्मरण शक्ति को लाभ पहुँचता है। जरावस्था आने पर भी देह में बल बना रहता है।

बृहस्पति के चंद्रमा पर लावा की झील

वाशिंगटन। अमेरिका में एक अत्यधिक शक्तिशाली दूरबीन ने बृहस्पति ग्रह के चंद्रमा 'लो' पर अवस्थित लावा की एक विशाल झील ढूंढ़ निकाली है। इस चंद्रमा का पता इटली के विख्यात वैज्ञानिक गैलीलियो ने सन् 1610 में लगाया था।

सर्वाधिक सक्रिय पिंड

वैज्ञानिकों का कहना है कि 'लो' हमारी सौर प्रणाली में भूगर्भ विज्ञान के दृष्टिकोण से सर्वाधिक सक्रिय पिंड है। इस पर सैकड़ों ज्वालामुखी सक्रिय हैं। यह उपग्रह मुख्यतः सल्फर और सल्फर डाई ऑक्साइड से आवृत्त है। इस उपग्रह का नाम लो नोर्से के अग्नि और अव्यवस्था के देवता लोकी के नाम पर रखा गया है। ज्वालामुखियों के विस्फोट के इस मंजर को पैटेरा कहते हैं।

घनीभूत लावा की परत

लावा की इस झील पर घनीभूत लावा की परत विद्यमान है। यह परत वारहा झील में डूब जाती है। क्योंकि ज्वालामुखी की सक्रियता के कारण द्रव लावा इसमें जमा हो जाता है। जिसके नीचे पुरानी परत डूब जाती है। कुछ दिन बाद यह द्रव पुनः जमकर ठोस बन जाता है। इससे निकले तापमान का पृथ्वी से पता चल जाता है।

दो सौ मीटर व्यास का उपग्रह

यह उपग्रह इतना छोटा था कि कुछ दिन पहले तक धरती से इसकी सतह के बारे में अधिकतर चीजों का पता ही नहीं चल पाता था। इसका व्यास मात्र 200 किलोमीटर था। जबकि पृथ्वी से इसकी दूरी कम से कम 37 करोड़ 30 लाख मील है। इसकी सतह को अमेरिका के आरीजोना प्रांत में लगे विशाल दूरबीन से बारीकी से देखा जा सका है। जिसमें दो दर्पण लगे हैं।

प्रकाश का समन्वय

वैधशाला के वरिष्ठ वैज्ञानिक आल कोनार्ड ने बताया कि हम दो विशाल दर्पणों से प्राप्त प्रकाश को समन्वय के साथ मिलाते हैं जिससे दर्पण एकाकार हो जाते हैं। इस तरह हमने पहली बार झील के विभिन्न भागों से प्राप्त दीप्तियों का सही पता लगाया है।

सेना को मिली 'आकाश' की ताकत

अब दुश्मन के ड्रोन भी नहीं बच सकेंगे

भारतीय सेना को लंबे इंतजार के बाद हवाई हमलों के खिलाफ बड़ा हथियार आकाश मिसाइल प्रणाली मिल गई जिससे वह दुश्मन के लड़ाकू विमानों और हेलीकॉप्टरों के साथ–साथ ड्रोन विमानों को भी पलक झपकते ही ध्वस्त कर सकती है। आकाश मिसाइल प्रणाली अत्याधुनिक श्रेणी के राडार से लैस है।

ऐसी है आकाश

यह अत्याधुनिक प्रणाली देश में ही बनी है।

हर तरह के मौसम में 3 से 25 किलामीटर तक मार करने में सक्षम।

सतह से हवा में मार करने वाली यह मिसाइल 30 मीटर से 20 किलोमीटर तक की ऊँचाई के कई लक्ष्यों को एक साथ भेद सकती है।

लम्बाई लगभग 6 मीटर।

वजन 720 किलोग्राम।

अपनों से अपनी बात

चारों तरफ चहल–पहल, कोई इधर दौड़ रहा है–कोई उधर। हर्षोल्लास के वातारवण में दुल्हे राजा अपने इष्ट मित्रों के साथ पाणिग्रहण संस्कार के बने हए मण्डप की तरफ आये। पण्डित जी ने पाणिग्रहण संस्कार कराने प्रारंभ किये। इन सारे विधि विधान के बीच पंडित जी ने दुल्हे को दादा जी व पड़दादा जी का नाम पूछा? दादा जी का नाम पूछा तो कुछ सोचने के बाद उनको याद आ गया, किन्तु दिमाग पर बहुत जोर डालने पर भी पड़दादा जी का नहीं बता पाये– नाम? हमारे मन में विचार उठे–इनके पड़दादा जी ने तो अपनी सात पीढ़ियों के लिये जो बिल्डिंग खड़ी की थी। उन्होंने तो हजारों गरीबों का खून चूसकर भी वैभव के इतने सरंनाम जुटाये थे, और इतनी पूंजी छोड़ गये थे कि उसका ब्याज ही हजारों रूपये माह आता है, फिर भी उन ''बेचारे'' का नाम उनकी दो पीढ़ी बाद के लड़के को ही विदित नहीं? इन्हीं विचारों को लिये दूसरे दिन जब हम विद्यालय के पास से गुजर रहे थे तो कानों में आवाज सुनाई दी–स्वामी विवेकानन्द की जय! वीर सावरकर की जय! क्या इन महापुरूषों में से किसी का पोता या पड़पोता भी इन बच्चों में से है या नहीं? अपने सद्कर्मों से, त्याग और समाज सेवा से उनके नाम अमर हो गये–पीढ़ी दर पीढ़ी, पर बेचारा वह पड़दादा तो....। प्रभु से प्रार्थना करें– हे! करूणावतार! हमें पवन पुत्र हनुमानजी के दास्य भाव का, भक्ति मति मीरां के समर्पण भाव का तथा स्वामी विवेकानन्द जी की ओजस्विता का कुछ अंश प्रसाद स्वरूप प्रदान कर, ताकि हम सच्चे मानव की तरह सद्कर्म करते हुए जब तक जिएं, चारों तरफ खुशबू फैलाते हुए जिएं। उस रेल यात्री की तरह, जो सफर के दौरान फूलों के बीज बिखेरता हुआ प्रसन्न भाव से अपनी मंजिल को प्राप्त कर रहा था। –

श्री कैलाश 'मानव' पद्मश्री अलंकृत

बंधन व मोक्ष का कारण है-मन

अध्यात्म शास्त्रों में मन को ही बंधन और मोक्ष का कारण बताया गया है। मनोवेत्ता भी इस तथ्य से परिचित हैं कि मन में अभूतपूर्व गति, दिव्यशक्ति, तेजस्विता एवं नियंत्रण शक्ति है। इसकी सहायता से ही सभी कार्य होते हैं। मन के बिना कोई कर्म नहीं हो सकता।

भूत, भविष्य और वर्तमान सभी मन में ही रहते हैं। ज्ञान, चिंतन, मनन, धैर्य आदि इसके कारण ही बन पड़ते हैं। शुद्ध मन जहाँ अनेक दिव्य क्षमताओं का भंडारा है, वहीं अशुद्ध या विकृत मनःस्थिति रोग, शोक एवं आधिव्याधि का कारण बनता है।

महर्षि पतंजलि ने योगदर्शन में चित्तवृत्तियों के निरोध को योग कहा है। अनियंत्रित, अस्त–व्यस्त और भ्रांतियों में भटकने वाली मनःस्थिति को मानवी क्षमताओं के अपव्यय एवं भक्षण के लिए उत्तरदायी बताया है और इसे दिशा विशेष में नियोजित रखने का परामर्श भी दिया है। गीतकार ने भी मन को ही मनुष्य का मित्र एवं शत्रु ठहराया है और इसे भटकाव से उबारकर अपना भविष्य बनाने का परामर्श दिया है।

सुप्रसिद्ध मनोविज्ञानी हेक ड्यूक ने अपनी पुस्तक –'माइंड एण्ड हेल्थ' में शरीर पर पड़ने वाले मानसिक प्रभाव का सुविस्तृत पर्यवेक्षण प्रस्तुत करते हुए कहा है कि शरीर पर आहार के व्यतिक्रम का प्रभाव तो पड़ता ही है, अभाव व पोषक तत्वों की कमी भी अपनी प्रतिक्रिया छोड़ती है। काया पर सर्वाधिक प्रभाव व्यक्ति की अपनी मनःस्थिति का पड़ता है। यह प्रभाव–प्रतिक्रिया नाडीमंडल पर 36 प्रतिशत, अंतःस्त्रावी हार्मोन ग्रंथियों पर 56 प्रतिशत एवं मांसपेशियों पर 8 प्रतिशत पाया गया है।

आज की प्रचलित तमाम उपचार–विधियों–पैथियों एवं नवीनतम औषधियों के बावजूद अनेक प्रकार के रोगों की बाढ़–सी आयी हुई है। ऐसी परिस्थितियों में रोग निवारण का सबसे सस्ता एवं हानिरहित सुनिश्चित तरीका निर्धारण करना होगा। इसके लिए रोगोत्पत्ति के मूल कारण मनःस्थिति की गहन जाँच–पड़ताल अपनाने पर ही रूग्णता पर विजय पायी जा सकती है।

अब समय आ गया है जब 'होप' अर्थात् आशा, 'फेथ' अर्थात् श्रद्धा, 'कॉन्फीडेंस' अर्थात् आत्मविश्वास, 'विल' अर्थात् इच्छाशक्ति एवं 'सजेशन' अर्थात् स्वसंकेत जैसे प्रयासों को स्वास्थ्य संवर्द्धन के क्षेत्र में प्रयुक्त किया जाना चाहिए। मन की अतल गहराई में प्रवेश करके दूषित तत्वों की खोजबीन करके, उन्हें बाहर करने में यही तत्व समर्थ हो सकते हैं, अन्य कोई नहीं।

आज के वैज्ञानिकों ने काया के बाद बुद्धि को अधिक महत्व दिया है। बुद्धि मनुष्य की प्रतिभा–प्रखरता को निखारने, योग्यता बढ़ाने के काम आती है। प्रत्येक क्षेत्र में इसी का बोलबाला या वर्चस्व है। अभी तक मानवी व्यक्तित्व की इन दोनों स्थूल परतों–शरीर और बुद्धि को ही सर्वत्र महत्व मिलता रहा है। इन दोनों की अपेक्षा मन अधिक सूक्ष्म है। प्रत्यक्ष रूप से इसकी भूमिका दिखाई नहीं पड़ने से अधिकांश व्यक्ति इसको महत्वहीन समझते हैं जबकि बुद्धि और शरीर दोनों ही मन के इशारे पर ही चलते हैं। इस तथ्य की पुष्टि अब अनुसंधानकर्ता, मनोवेत्ताओं ने भी की है कि बीमारियों की जड़ें शरीर में नहीं, मन में छिपी होती है।

बिना क्रीम के चमकाएँ त्वचा को

त्वचा का रंग व वर्ण :–

त्वचा शरीर की सबसे बड़ी व विशाल ग्रंथि होती है। हमारे पूरे शरीर में 70 लाख छिद्र होते हैं। इन छिद्रों से ताजी हवा छनकर अंदर जाती है तथा इन छिद्रों से हम श्वसन क्रिया करते हैं। पसीने के साथ यूरिक एसिड, यूरिया आदि अवशिष्ट पदार्थ या जहरीले पदार्थ बाहर निकलते हैं। प्रत्येक कोशिका इनसे नया जीवन शुरू करती है।

त्वचा पर तरह–तरह के क्रीम, पाउडर, साबुन, सुगंधित रसायनों का प्रयोग करके हम रोम छिद्रों को बंद करते हैं। जिससे त्वचा में रोग पैदा होते हैं तथा वर्ण बदल जाता है। इससे त्वचा किसी की काली, फुंसीयुक्त, मोटी धब्बे, दाग युक्त व नीली हो जाती है। पेट्रोलियम धागे के वस्त्र टेरीलिन, टेरीकोट या सिंथेटिक वस्त्र तथा एकदम टाइट वस्त्र पहनने से भी त्वचा को नुकसान होता है। किसी व्यक्ति की त्वचा तैलीय, रूखी, पतली, मोटी व बदबूदार होती है। त्वचा में फोड़े, फूंसी, दाद, खाज, खुजली होना भी आम बात है। त्वचा शरीर का एक आवरण है जो बाहरी पदार्थों से आन्तरिक शरीर की रक्षा करती है। इसलिए बीमार होने पर त्वचा का रंग बदल जाता है। पूरी तरह त्वचा का रंग बदलने में 27 दिन लगते हैं।

उपचार :–

- दाद, खाज, खुजली, फुंसी होने पर नीम के पानी से नहाएँ। उसके बाद सरसों के तेल से (गुनगुनी धूप में बैठकर) मालिश करें।
- सरसों के तेल में आक के पत्तों की राख, गंधक व कपूर मिलाकर लगाएँ।
- नीम के पत्तों का रस, मेहंदी के पत्तों का रस, संतरे का रस, चिकनी मिट्टी में बराबर लेकर शरीर पर लगाएँ।

रूखी त्वचा में :–

- शहद, मलाई या शहद, मक्खन मिलाकर लगाएँ।
- तेल या ग्वारपाठा, दूध या दही या घी शरीर पर लगाकर गीले तौलिये से स्पंज करें।
- केला या आम को पूरे शरीर में रगड़कर ठंडे पानी से नहाएँ।

तैलीय त्वचा में :–

- मुल्तानी मिट्टी से स्नान करें।
- काली मिट्टी को पूरे शरीर पर लगाकर सूखने के बाद स्नान करें।
- भाप स्नान करें या गरम पानी से शरीर को पौंछे।
- हल्दी व आटा मिलाकर पूरे शरीर को रगड़कर साफ करें।
- गुलाबजल व ग्लिसरीन मिलाकर पूरे शरीर पर लगावें। स्नान करने के बाद सूखे तौलिये से रगड़ें।

सभी तरह की त्वचा में :–

- गिलोय 5 ग्राम व असंध 5 ग्राम उबालकर पीवें तथा ऊपर से अंगूर, संतरा, मौसम्मी का रस लेवें।
- मजीठ या चिरायता का काढ़ा पीवें तथा रात को भीगा मुनक्का खावें।
- खदिर की छाल का काढ़ा बनाकर पीवें या छाछ पीवें या नीबू की शिकंजी लें।
- खीरा ककड़ी का रस, ज्वारे का रस, गाजर का रस या पुदिन हरा का रस तो रामबाण है।
- तेज धूप से बचें।

सम्पादकीय

एक नगर था। नगर में एक व्यक्ति फेरी लगाकर सामान बेचा करता और अपने बच्चों का पेट भरता। उसका नाम 'सुजान' था। सुजान हमेशा कहता था कि वह अपनी मेहनत, बुद्धि और भाग्य की खाता है, किसी की कृपा की नहीं। बात राजा तक पहुँची। राजा ने उसकी परीक्षा लेने की ठानी। राजा ने सुजान को द्वारपाल बना दिया। दिन भर पहनेदारी करने के बाद शाम होते–होते सुजान को अपने बच्चों के भोजन की फिक्र सताने लगी। उसने पास में पड़ी लकड़ी की एक टहनी को छीला और उसे तलवार की जगह म्यान में रख लिया। तलवार बेचकर उसने अपने बच्चों के खाने का प्रबन्ध किया। राजा को यह बात पता चल गयी।

दूसरे दिन राजा ने उस दरवाजे का निरीक्षण किया जहाँ सुजान पहरेदारी के लिए तैनात था। राजा ने अकारण ही एक सेवक को जोर से डाँट लगायी और सुजान से कहा, 'इस सेवक का अपराध अक्षम्य है। अपनी तलवार निकालो और इसका सिर धड़ से अलग कर दो।' सुजान मन ही मन घबराया लेकिन उसने चतुराई से काम लिया और आसमान की ओर मुँह करते हुए बोला, 'अगर यह सेवक बेकसूर है तो मेरी तलवार लकड़ी की हो जाये।' उसने म्यान में से तुरन्त तलवार खींच ली। लकड़ी की तलवार देखकर सभी दरबारी इसे ईश्वरीय करामात समझकर अचम्भित रह गये। राजा को सब पता था। सुजान की चतुराई से प्रसन्न होकर कहा, 'वाकई हम अपनी मेहनत, बुद्धि और भाग्य की ही खाते हैं, किसी की कृपा की नहीं।'

सुविचार

योगी का वेष बनाने और आवरण धारण करने की आवश्यकता नहीं। श्रेष्ठता को स्वभाव और प्रयास में सम्मिलित करने वाले योगी कहलाते हैं।

स्वयं को जानने के लिए हमें जाग्रत होना है

शरीर बोझ है यदि बीमार है, मन बोझ है अगर उसे ज्ञान नहीं है। 'मैं शरीर हूँ' इस अज्ञान के साथ जब हम जीते हैं तब वास्तव में नरक में ही जी रहे हैं। असली 'मैं' को न जानने की वजह से और इसके प्रति जाग्रत न होने के कारण हमें ऐसे लगता है कि शरीर के साथ होने वाली हर चीज मेरे साथ हो रही है। उदाहरण के लिए, अगर किसी के कुर्ते पर कीचड़ लग जाए या किसी की शर्ट फट जाए तो वह यह नहीं कहेगा कि 'उसे कीचड़ लगी है या वह फट गया है।' कीचड़ कुर्ते पर लगी है, न कि उस इंसान के शरीर पर । शर्ट फटी है, वह इंसान नहीं। इसी तरह यह कहा जा सकता है कि 'शारीरिक पीड़ा या यातना भी मेरे साथ नहीं बल्कि मेरे शरीर के साथ है।' समस्या यह है कि बचपन से ही लोगों को यह मान्यता दी जाती है कि 'तुम शरीर हो।' इस तरह से शारीरिक बीमारियाँ एक नरक तैयार कर देती हैं। जैसे किसी को दाँत का दर्द है तो उसके लिए वह किसी नरक से कम नहीं है।

इंसान केवल गलत धारणा की वजह से स्वयं को शरीर मान बैठता है। शरीर तो सिर्फ एक जड़ वस्तु है। जिस तरह पंखा एक वस्तु है, उसी तरह शरीर भी एक जड़ वस्तु है। इस शरीर को 'मैं' मानकर जीने को ही अहंकार कहा गया है। इसलिए शरीर की बीमारियाँ, पीड़ाएँ, यातनाएँ इंसान के लिए नरक बन जाती हैं। असल में तो शरीर मन, बुद्धि से परे है, इस असली 'मैं' को जानने के लिए ही हमें जाग्रत होना है।

विकलांग धर्मेश की पढ़ाई का मार्ग प्रशस्त

उदयपुर । सेवा परमों धर्म ट्रस्ट ने जयपुर के एक निजी अंग्रेजी माध्यम स्कूल में पढ़ने वाले विकलांग बालक का वार्षिक शिक्षण शुल्क देकर उसके आगे के अध्ययन के मार्ग प्रशस्त किया है। ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री प्रशान्त अग्रवाल ने बताया कि धर्मेश माधीवाल ने पिछले वर्ष माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सेकण्डरी परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की थी। इसके पिता नही है और माँ मजदुरी करती है। दो छोटी बहने भी विकलांग है।

हम स्वावलंबी बन जाएँ

जो तैरना जानता है, वही दूसरों को डूबने से बचा सकता है। जिसकी खुद की आँखों पर गलत धारणाओं की पट्टी बँधी हो, वह किसी दूसरे की पट्टी कैसे देख सकता है या खोल सकता है ? एक उदाहरण से हम इस बात को ज्यादा अच्छी तरह से समझ सकते हैं।

एक लकड़हारा आँखों पर पट्टी बाँधकर बड़ी मेहनत और लगन से दिन भर लकड़ियाँ काटता है। हम जानते हैं कि अगर वह अपनी आँखों पर बँधी पट्टी हटा दे तो उसका काम बहुत आसान हो जाएगा। लेकिन वह यह बात मानने और समझने को तैयार ही नहीं है। वह कहता है, 'मेरे पास बहुत काम है, पट्टी निकालने का भी समय नहीं है।' वह यह समझ ही नहीं पाता कि पट्टी निकालने के बाद वह पहले से कई गुना ज्यादा काम कम समय में कर पाएगा।

इसी तरह कहीं हमने भी तो अपनी आँखों पर पट्टी नहीं बाँध रखी है ? यह जाँचे। यह पट्टी है 'मान्यताओं की, कल्पनाओं की, अज्ञान की, बेहोशी की।' इन पट्टियों की वजह से ही हम जीवन में आशा–निराशा, सुख–दुःख, सफलता–असफलता में विभाजित जीवन जी रहे हैं। यदि हम ये पट्टियाँ उतार फेंकें तो हमारे काम जल्दी और आसानी से भी होंगे। लेकिन इसके लिए हमें यह पता होना चाहिए कि हमारी आँखों पर पट्टियाँ बँधी हैं और वे हमारे काम में बाधा डाल रही हैं। जाग्रति का उद्देश्य यही है कि विश्व के हर इंसान की आँखों पर बँधी पट्टी (बेहोशी) हट जाए और हर इंसान 'जवान' बन जाए। अब समय आ चुका है कि हम सत्य की मशाल जलाकर प्राकृतिक जीवन जाएँ।

धरती का सूरज महाराणा प्रताप

वीर शासक एवं महान देशभक्त महाराणा प्रताप का नाम इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से अंकित है। महाराणा प्रताप अपने युग के महान व्यक्ति थे। उनके गुणों के कारण सभी उनका सम्मान करते थे।ज्येष्ठ शुक्ल तीज सम्वत् (9 मई) 1540 को मेवाड़ के राजा उदय सिंह के घर जन्मे उनके ज्येष्ठ पुत्र महाराणा प्रताप को बचपन से ही अच्छे संस्कार, अस्त्र–शस्त्रों का ज्ञान और धर्म की रक्षा की प्रेरणा अपने माता–पिता से मिली।

सादा जीवन और दयालु स्वभाव वाले महाराणा प्रताप की वीरता और स्वाभिमान तथा देशभक्ति की भावना से अकबर भी बहुत प्रभावित हुआ था। राजस्थान के कई परिवार अकबर की शक्ति के आगे घुटने टेक चुके थे, किन्तु महाराणा प्रताप अपने वंश को कायम रखने के लिये संघर्ष करते रहे और अकबर के सामने आत्मसर्मपण नही किये।जंगल–जंगल भटकते हुए तृण–मूल व घास–पात की रोटियों में गुजर–बसर कर पत्नी व बच्चे को विकराल परिस्थितियों में अपने साथ रखते हुए भी उन्होंने कभी धैर्य नहीं खोया। पैसे के अभाव में सेना के टूटते हुए मनोबल को पुनर्जीवित करने के लिए दानवीर भामाशाह ने अपना पूरा खजाना समर्पित कर दिया। तो भी, महाराणा प्रताप ने कहा कि सैन्य आवश्यकताओं के अलावा मुझे आपके खजाने की एक पाई भी नहीं चाहिए। अकबर के अनुसारः– महाराणा प्रताप के पास साधन सीमित थे, किन्तु फिर भी वो झुके नही, डरे नही।

महाराणा प्रताप का हल्दीघाटी के युद्ध के बाद का समय पहाडों और जंगलों में व्यतीत हुआ। अपनी पर्वतीय युद्ध नीति के द्वारा उन्होंने अकबर को कई बार मात दी। यद्यपि जंगलो और पहाडों में रहते हुए महाराणा प्रताप को अनेक प्रकार के कष्टों का सामना करना पडा, किन्तु उन्होने अपने आदर्शों को नही छोडा। महाराणा प्रताप के मजबूत इरादो ने अकबर के सेनानायकों के सभी प्रयासों को नाकाम बना दिया। उनके धैर्य और साहस का ही असर था कि 30 वर्ष के लगातार प्रयास के बावजूद अकबर महाराणा प्रताप को बन्दी न बना सका। महाराणा प्रताप का सबसे प्रिय घोड़ा 'चेतक' था जिसने अंतिम सांस तक अपने स्वामी का साथ दिया था। हल्दीघाटी के युद्ध में उन्हें भले ही पराजय का सामना करना पडा किन्तु हल्दीघाटी के बाद अपनी शक्ति को संगठित करके, शत्रु को पुनः चुनौती देना प्रताप की युद्ध नीति का एक अंग था। महाराणा प्रताप ने भीलों की शक्ति को पहचान कर उनके अचानक धावा बोलने की कारवाई को समझा और उनकी छापामार युद्ध पद्धति से अनेक बार मुगल सेना को कठिनाइयों में डाला था। महाराणा प्रताप ने अपनी स्वतंत्रता का संघर्ष जीवनपर्यन्त जारी रखा था। अपने शौर्य, उदारता तथा अच्छे गुणों से जनसमुदाय में प्रिय थे। महाराणा प्रताप सच्चे क्षत्रिय योद्धा थे, उन्होने अमरसिंह द्वारा पकडी गई बेगमों को सम्मान पूर्वक वापस भिजवाकर अपनी विशाल हृदय का परिचय दिया।

महाराणा प्रताप को स्थापत्य, कला, भाषा और साहित्य से भी लगाव था। वे स्वयं विद्वान तथा कवि थे। उनके शासनकाल में अनेक विद्वानो एवं साहित्यकारों को आश्रय प्राप्त था। अपने शासनकाल में उन्होने युद्ध में उजडे गाँवों को पुनः व्यवस्थित किया। नवीन राजधानी चावण्ड को अधिक आकर्षक बनाने का श्रेय महाराणा प्रताप को जाता है। राजधानी के भवनों पर कुम्भाकालीन स्थापत्य की अमिट छाप देखने को मिलती है। पद्मिनी चरित्र की रचना तथा दुरसा आढा की कविताएं महाराणा प्रताप के युग को आज भी अमर बनाये हुए हैं।

महाराणा प्रताप में अच्छे सेनानायक के गुंणो के साथ–साथ अच्छे व्यस्थापक की विशेषताएँ भी थी। अपने सीमित साधनों से ही अकबर जैसी शक्ति से दीर्घ काल तक टक्कर लेने वाले वीर महाराणा प्रताप की मृत्यु पर अकबर भी दुःखी हुआ था। अकबर की उच्च महत्वाकांक्षा, शासन निपुणता और असीम साधन जैसी भावनाएं भी महाराणा प्रताप की अदम्य वीरता, दृणसाहस और उज्वल कीर्ति को परास्त न कर सकी। आखिरकार शिकार के दौरान लगी चोटों की वजह से महारणा प्रताप की मृत्यु 19 जनवरी 1597 को चावंड में हुई।

आज भी महाराणा प्रताप का नाम असंख्य भारतीयों के लिये प्रेरणा स्रोत है। राणा प्रताप का स्वाभिमान भारत माता की पूंजी है। वह अजर अमरता के गौरव तथा मानवता के विजय सूर्य है। राणा प्रताप की देशभक्ति, पत्थर की अमिट लकीर है। ऐसे पराक्रमी भारत मां के वीर सपूत महाराणा प्रताप को राष्ट्र का शत्–शत् नमन।

क्यों न दुःखों का भी उल्लास मनाया जाए

न तो कोई समय खराब होता है और न ही कोई परिस्थिति। न कोई स्थान खराब होता है और न ही कोई घटना। चाहे ये कितने भी खराब क्यों न हों, इन सभी में कोई न कोई गुणवत्ता छिपी ही रहती है। यदि समय कठिन है, यदि परिस्थितियाँ विपरीत हैं, तो वे हमें लड़ना सिखाकर मजबूत बनाती हैं।

सोचिए कि यदि भगवान राम को वनवास नहीं मिला होता और वे सिंहासन पर बैठ गए होते, तो क्या वे हमारे आराध्य बन पाते। सभी महापुरुष पहले हमारी तरह पुरुष ही थे। घटनाओं ने ही उन्हें 'महान्' बनाया है।

आप और मैं यानी कि हम सभी प्रकृति के इसी नियम से बँधे हुए हैं। इसलिए दुःखों का रोना कैसा। क्यों न दुःखों का भी उल्लास मनाया जाए, उन्हें उत्सवों में बदल दिया जाए, क्योंकि कोई भी चीज ऐसी नहीं होती, जिसका सार्थक उपयोग न किया जा सके।

कला जीवन जीने की

मस्तिष्क

देह का कम्प्यूटर है जिसमें ।
रंग गुलाबी हलवे जैसा द्रव्य भरा है जिसमें ।
है प्रधान अध्यापक तन का, केन्द्र जटिल कामों का ।
मस्तिष्क से निर्देशन पाकर, सब कुछ चलता जिसमें ।।

मस्तिष्क में दस अरब तन्त्रिका और कोशिका होती ।
यादें अनुभव ज्ञान ध्यान सब, एकत्रित हो जिसमें ।।

बंशी जी 'बावरा'

मन के जीते जीत सदा

दैनिक समाचार पत्र

ई.डी.– 71, बप्पा रावल नगर, हिरण मगरी
सेक्टर नं. – 6, उदयपुर (राज.)313001
मो. नं. – 02943990014, 09672711118,09928022275

सदस्यता - शुल्क

मासिक शुल्क – 60 रुपये
त्रैमासिक शुल्क – 170 रुपये
अर्द्धवार्षिक शुल्क – 330 रुपये
वार्षिक शुल्क – 650 रुपये

सदस्यता - फॉर्म

मन के जीते जीत सदा का मासिक/त्रैमासिक/अर्द्धवार्षिक/वार्षिक सदस्य बनना चाहता/चाहती हूँ जिसकी सदस्यता की राशि मनीआर्डर/चैक/ड्राफ्ट से भेज रहा हूँ/रही हूँ।

सदस्य का पूरा नाम.....
डाक का पता..... पिन.....
व्यवसाय .....फोन/फैक्स..... मो.....
मनीआर्डर/ड्राफ्ट संख्या .....
दिनांक.....

नोट - कृपया मनीआर्डर/ड्राफ्ट/चैक मन के जीते जीत सदा के नाम से ही भेजें।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी – डॉ. कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक–प्रशान्त अग्रवाल, जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका–कमला देवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक – सोहन गाडरी
संपादक – लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादक सहयोगी – घनश्याम सिंह राठौड़

मुद्रक–न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक–कमला देवी, मुद्रण स्थल–13,भोपा मगरी, बीएसएनएल एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर–3, उदयपुर (राज.) प्रकाशन स्थल–ई–डी–71 बापा रावल नगर, हिरण मगरी, सेक्टर–6, उदयपुर (राज.) सम्पादक–लक्ष्मी लाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 मो.–09928022275,09785039524 www.mannkijeet.com E-mail : mankijeet2015@gmail.com